मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 10 **MTT–045**

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

एम.टी.टी.–045 : हिंदी–सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 20

   (क) वर्गीकृत विज्ञापनों के प्रकार बताइए। हिंदी में एक वैवाहिक विज्ञापन बनाकर उसका सिंधी अनुवाद कीजिए।

अथवा

(ख) सांस्कृतिक समाचारों का महत्व समझाते हुए साहित्य, वाद–विवाद, ललित कला अथवा सिनेमा से संबंधित किन्हीं **दो** संक्षिप्त समाचार शीर्षक सहित लिखिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखते हुए उनका हिंदी में प्रयोग कीजिए : 10

(i) मुद्रक

(ii) पूर्वानुमान

(iii) संख्या

(iv) नकद

(v) अर्थहीन

(vi) वयस्क

(vii) भत्ता

(viii) संशोधन

(ix) मूल्यांकन

(x) कहावत

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखते हुए उनका सिंधी में प्रयोग कीजिए : 10

(i) सियारो

(ii) जूअरि

(iii) अर्जु

(iv) आसूदो

(v) दस्तखत

(vi) सियासत

(vii) सीरत

(viii) निमाणो

(ix) तहरीर

(x) हाणोको

4. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इनमें से किन्हीं **पाँच** का हिंदी और सिंधी में अर्थ बताते हुए हिंदी और सिंधी के वाक्यों में अलग-अलग प्रयोग कीजिए : 15

हिंदी शब्द	सिंधी शब्द
अव्यवस्था	ड॒िहाड़ी
संभव	अक्सु
चुनाव	कलर
प्रोत्साहन	शख्सियत
विशेषता	कावड़ि

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** अनुच्छेदों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 2×15=30

(क) उत्तर–आधुनिक में आधुनिक और सहज कहानी की कितनी ही महत्वपूर्ण विशेषताएँ समाहित हैं, फिर भी बदलती हुई प्रवृत्तियों के कारण, कितने ही विषयगत परिवर्तन कहानी में देखे जा सकते हैं। कहानी–कला के स्तर पर भी कुछ बदलाव आए हैं, जो विभिन्न भारतीय भाषाओं की कहानियों के साथ, सिंधी कहानी में भी देखे जा सकते हैं, इनकी बहुत ज़्यादा विवेचना यहाँ आवश्यक नहीं है। पर सिंधी में उत्तर–आधुनिक काल में एक महत्वपूर्ण तथ्य की ओर ध्यान अवश्य जाता है। जैसे आज के दौर में लोग (आम या खास कोई फर्क नहीं है) भले अकेले ही, निहत्थे, शोषण (बड़े पैमाने पर, कई–कई मायनों में), अत्याचार, आतंक, अधीनता, आर्थिक दबाव, वैश्वीकरण और मुक्त बाज़ारवाद के नकारात्मक प्रभावों, स्वदेशी का लुप्त होना, सिर्फ़ ग्लैमर, बेशर्म या खराब संस्कृति का पनपना, बेरहम बिडंबनाएँ, निजी (भाषा–बोली, कौम, संस्कृति सहित) पहचान के संकट आदि के खिलाफ

जूझते रहे हैं। सामूहिक विरोध अथवा खिलाफत लगभग खत्म है, उल्टे कई प्रकार की गुलामियाँ चारों ओर घूम रही हैं, फिर भी जिंदगी की ओर उनका रुख निराशावादी नहीं है। अपने आस–पास और लोगों के प्रति जबावदारी का अहसास रखते हुए विश्व–जन के साथ सहजीवन में विश्वास रखते हैं, वैसे ही सिंधी लोग अपनी निजी पहचान (अपना घर, पड़ोस, भाषा, जमीन, विरासत..........) के साथ, आज, अपनी सांस्कृतिक पहचान के संकट का भी सामना कर रहे हैं। वे यह तो चाहते ही हैं कि विश्व के हर व्यक्ति और उसकी अपनी संस्कृति की निजी महक बरकरार रहे। सिंधी में ऐसी, और इससे जुड़े दूसरे विषयों पर भी कई कहानियाँ लिखी जा रही हैं, और कितनी तो बहुत कलात्मक भी हैं।

(ख) शब्द यात्रा करते हैं

मैं किसी दूसरे देश में रहती हूँ

फिर भी अपना घर नहीं छोड़ती।

अपने साथ अक्षर लिए घूमती हूँ मैं

व्याकरण की संरचनाएँ
शब्दों के अर्थ और उन्हें बोलने का लहजा।
क्या फ़र्क़
कि धरती के किसी भी कोने में जा बसूँ मैं
मैं उसी भाषा के भीतर रहती हूँ
जिसमें मेरा जन्म हुआ था।
दूसरी भाषाओं को कोई भी तूफ़ान
मेरी भाषा को नहीं उड़ा पाता।
मैं अपनी भाषा के भीतर
मैं हूँ–
उस भाषा का स्वप्न देखती हुई
जो एक रोज़ दुर्घटनावश मेरी मातृभाषा बन गई।
मैं अपने घर पर लिखती हूँ
बाहर परदेस में भी लिखती हूँ
सब जगह एक–सा है :
शब्दों के दिल प्रवासी पक्षियों जैसा होता है
उसे चीरो, तो दिखता है
वे सब किसी न किसी के पास पहुँच जाना चाहते हैं
और मैं रहती हूँ,
उन्हीं शब्द–पक्षियों के साथ
उनके गायन और उनकी फटी हुई आवाज़ वाली पुकार
के साथ।

(ग) क्या मैं इस बेंच पर बैठ सकती हूँ ? नहीं, आप उठिए नहीं—मेरे लिए यह कोना ही काफी है। आप शायद हैरान होंगे कि मैं दूसरी बेंच पर क्यों नहीं जाती ? इतना बड़ा पार्क—चारों तरफ खाली बेंचें—मैं आपके पास ही क्यों धँसना चाहती हूँ ? आप बुरा न मानें, तो एक बात कहूँ—जिस बेंच पर आप बैठे हैं, वह मेरी है। जी हाँ, मैं यहाँ रोज बैठती हूँ। नहीं, आप गलत न समझें। इस बेंच पर मेरा कोई नाम नहीं लिखा है। भला म्यूनिसिपैलिटी की बेंचों पर नाम कैसा ? लोग आते हैं, घड़ी-दो घड़ी बैठते हैं, और फिर चले जाते हैं। किसी को याद भी नहीं रहता कि फलाँ दिन फलाँ आदमी यहाँ बैठा था। उसके जाने के बाद बेंच पहले की तरह ही खाली हो जाती है। जब कुछ देर बाद कोई नया आगंतुक आकर उस पर बैठता है, तो उसे पता भी नहीं चलता कि उससे पहले वहाँ कोई स्कूल की बच्ची या अकेली बुढ़िया या नशे में धुत जिप्सी बैठा होगा।

पार्क में यही एक मुश्किल है। इतने खुले में सब अपने-अपने में बंद बैठे रहते हैं। आप किसी के पास जाकर सांत्वना के दो शब्द भी नहीं कह सकते। आप

दूसरों को देखते हैं, दूसरे आपको। शायद इससे भी कोई तसल्ली मिलती होगी। यही कारण है, अकेले कमरे में जब तकलीफ दुश्वार हो जाती है, तो अक्सर लोग बाहर चले आते हैं। सड़कों पर। पब्लिक पार्क में। किसी पब में। वहाँ आपको कोई तसल्ली न भी दे, तो भी आपका दु:ख एक जगह से मुड़कर दूसरी तरफ करवट ले लेता है। इससे तकलीफ का बोझ कम नहीं होता; लेकिन आप उसे कुली के सामान की तरह एक कंधे से उठाकर दूसरे कंधे पर रख देते हैं। यह क्या कम राहत है ? मैं तो ऐसा ही करती हूँ—सुबह से ही अपने कमरे से बाहर निकल आती हूँ। नहीं, नहीं-आप गलत न समझें—मुझे कोई तकलीफ नहीं। मैं धूप की खातिर यहाँ आती हूँ—आपने देखा होगा, सारे पार्क में सिर्फ यही एक बेंच है, जो पेड़ के नीचे नहीं है। इस बेंच पर एक पत्ता भी नहीं झरता।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** गद्यांश/पद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15

(क) गोवर्धन महबूबाणी भारती परावनि सां पंहिंजो, चर्चाई, महफ़िल जो मोरु हो। संदसि संग में टहिकनि या

फूहारा पिया फहिलबा हुआ। नफ़ीस दिलि, हड॒ कुर्क वारो, कलाकारनि जे साथ ऐं सहकार जो कांखी, संदनि खुशीअ ऐं सहिंज जो ओनो रखंदडु हमदर्द शख़्सु हो। दोस्तोअ जो नंगु हुन सभिन सां निबाहियो, अलबत्ति जड॒हिं गोशा नशीन थी, पाण खे सहेड़ ऐं सोड़हो करे छडि॒याई, तड॒हिं ख़त पट लिखण जी जेका आदत हुअसि, तंहिं खे तिलांजली डे॒ई छडि॒याई। पर जेके वटिसि वेंदा हुआ, तिनि सां रिहाण रस करण में का कोताही न कयाई।

शाइरु त हो ई, हिन्दी शाइरीअ जो अवाइली दौर में मथिसि वडो॒ असर हो। पर उन बइदि हुन सिंधी शाइरीअ जे खूबसूरतीअ, सूंहं ऐं बो॒लीअ जो जा॒ण जा उहा झलका डे॒खारिया, जो वाह वाह। गीत संदसि पसंद वारी सनफ़ हुई। हुन गीत में संगीत ऐं लय जो अहिड़ो त दिलकश संगम रखियो, जो उन जी रवानी, जानदार ऐं दिलकश बणिजी पेई। हुन लोक कथाउनि जे किरदारनि खे वरी उभारियो। हुन गीतनि खां सवाइ ग़ज़ल ऐं नज़्म बि लिखिया, आज़ाद कविता में बि हुन मंज़रकशी भरी। संदसि 'सैनीटोरियम जी हिक रात' में निहायत दिलि खं छुडंदड़ असर आहे।

अथवा

(ख) कविता–तनहा

1. रवि ख्वाह कवि, ब॒रण बि॒न्ही लाइ लाज़मी।
2. तरक़्क़ी क्रिमिनल कोड जी, सभ्यता जो विकासु।
3. 'लीडर' अरेस्ट, कंप्लीट रेस्ट।
4. किनि जा भूंगा ब॒रनि, किनि जी चांहिं कढ़े तड॒हिं।
5. शींहुं ऐं ब॒करी गडु, ब॒ार बीहारिया मेज़ ते।
6. दिलकश पर्दा दरियुनि जा, राज़नि जा रखपाल।
7. गंगा धोए पाप, पाणी पेटनि में वञे।
8. लुग़तुनि जा अंबार, अखिड़ियुनि जी ब॒ोली किथे।
9. मन खे हिकु चाबुक हंयुमि, हू पियो हणे हज़ार।
10. लुड़कनि जो कींअं कदुरु थिए, खारो पाणी आहि।

× × × × ×